टिप्पणी

3

वर्तमान में सैन्य अध्ययन की आवश्यकता

पिछले अध्याय में आपने इतिहास के विभिन्न महत्वपूर्ण कालों के माध्यम से सैन्य अध्ययन की अवधारणा और विकास के बारे में जानकारी प्राप्त की है। प्राचीन समय से आधुनिक समय तक सैन्य शिक्षा में हुए परिवर्तन, हथियारों में हुए सुधारों और युद्ध लड़ने की तकनीक में हुए बदलावों का परिणाम है। सेनाओं में हुए इन परिवर्तनों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज हम आधुनिक हथियार और युद्ध लड़ने के नये प्रारूप देखते हैं। शक्तिशाली देश कमज़ोर देशों पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश कर रहे हैं। आज आतंकवाद, अलगाववाद, साईबर युद्ध तथा प्राकृतिक आपदाओं की चुनौतियां हैं। अराजक विश्व में सेनाओं को हर समय युद्ध के लिए तैयार रहना होता है। राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाली स्थितियों पर काबू पाने के लिए सरकारों को बल प्रयोग के महत्व को समझना चाहिए।

अत: सैन्य अध्ययन का विषय न केवल अति महत्वपूर्ण अपितु जटिल भी हो गया है। इस अध्याय में आप सेना तथा हथियारों की प्रणाली में हुए परिवर्तनों तथा युद्ध कला पर हुए उनके प्रभावों के बारे में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- सेनाओं में परिवर्तनों की आवश्यकता का आकलन कर सकेंगे;
- सेना के प्रशिक्षण में हुए बदलावों की व्याख्या कर सकेंगे;
- सशस्त्र बलों को प्रशिक्षण देने की प्रणाली की परख कर सकेंगे।

3.1 समय के साथ सेनाओं में हुए परिवर्तन

समय के साथ सेनाओं में बदलाव हुए हैं। नए-नए अविष्कार हुए और मनुष्य ने लोहे और तांबे जैसी धातुओं का प्रयोग करना सीखा। उसने मिश्रित धातु 'कांसा' का निर्माण किया। धातुओं के अविष्कार के बाद उसने धातु के हथियार बनाने शुरु किए जो अधिक घातक थे और उन्हें भिन्न

आकारों में बनाया जा सकता था। सेनाओं ने पुराने तरीके बदल कर शत्रु से लड़ने के नए तरीके और युक्तियों को विकसिक किया। नए प्रकार के हथियारों की जानकारी के लिए नीचे दिए चित्रों को देखिए।

चित्र : 3.1 विभिन्न युगों के हथियार

3.1.1 युद्धकला में हुए बदलाव

सैनिक इतिहास के अध्ययन से आपको ज्ञात होगा कि किस प्रकार समय के साथ युद्धों में बदलाव हुए। प्राचीन युग में 'चतुरंग बल' सेना होती थी, जिसमें तोपखाना, हाथी, रथ और पैदल सैनिक होते थे। युद्ध लड़ाई के मैदान में हुई लड़ाईयों की श्रृंखला होते थे। यद्यपि युद्ध की प्रकृति स्थिर होती थी, तदापि सेनाएं युद्ध में विजय के लिए विभिन्न प्रकार की रणनीतियों और युक्तियों का प्रयोग करती थीं।

वर्षों बाद जब धातु कर्म में प्रगति हुई तब नए हथियार बनाए गए। मध्यकाल में युद्ध में रथ दिखाई नहीं देते। सेना को चकित करने तथा तेज़ी से पहुंचने के लिए घुड़सवारों का प्रयोग किया जाता था। ये विभिन्न दिशाओं से आक्रमण के लिए तैयार होते थे अत: उस युग में घुड़सवारों का खूब प्रयोग किया गया। विज्ञान की प्रगति के साथ पहिये वाले वाहनों, बन्दूकों और गोला-बारूद का प्रयोग शुरु हुआ।

युद्ध जीतने के लिए मुग़लों ने बन्दूकों का व्यापक प्रयोग किया। 19वीं सदी में सैनिकों के निजी हथियारों-तलवारों और तीर-कमान का स्थान राइफलों और मशीनगनों ने ले लिया। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध से, युद्ध के रूप में बदलाव आया और तब युद्धों में खंदकों का प्रयोग शुरु हुआ। नीचे तालिका 3.2 को देखिए और आपको इसमें विभिन्न कालों में होने वाले परिवर्तनों की झलक दिखाई देगी।

काल	सेना का प्रकार	युद्ध की प्रकार	हथियार
प्राचीन काल	चतुरंग बल	अपरिवर्ती और स्थितीय	तलवारें, भाले, तीर कमान इत्यादि।
मध्य काल	पैदल, घुड़सवार और तोपखाना	स्थितीय और पैंतरेबाजी	तलवारें, तीर कमान और बन्दूकें
ब्रिटिश काल	घुड़सवार, पैदल, तोपखाना, सिगनल, इन्जीनियर, वायुसेना और जल सेना	पैंतरेबाजी, वायु और जल युद्ध	टैंक, तोपखाना, राइफलें, मशीन गन, बम, तारपीडो, मिसाइल और राकेट
आधुनिक युग	विशेष बल, थल सेना, वायु सेना और जल सेना	कूटनीतिक युद्ध, आतंकवाद, अलगाववाद, आमने-सामने युद्ध की जगह	ड्रोन्स, मिसाइलें, परमाणु हथियार, हेलिकोप्टर, हवाई हमलों में रक्षा करने वाले हथियार

तालिका 3.2 युद्ध कला में बदलाव

3.1.2 युद्धों पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

नए अविष्कारों के कारण विज्ञान ने युद्धों की प्रकृति को बदल दिया। मनुष्य द्वारा किए गए महत्वपूर्ण आविष्कारों से युद्धों में निम्नलिखित प्रकार के बदलाव आए :

- धातुओं और पहियों का प्रयोग (प्राचीन काल)
- गन पाऊडर (मध्य काल)
- आई सी इन्जिन (मोटर कार, रेलवे इन्जिन, टैंक)
- एयर क्राफट (हवाई जहाज)
- समुद्री जहाज, पनडुब्बियां और तारपीडो
- मिसाइलें
- वायरलेस संचार
- परमाणु बम
- आई.ई.डी. (विस्फोट के बेहतर साधन)
- ड्रोन्स

हमने यहां हथियारों पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव को देखा। सेनाओं में परिवर्तनों और आधुनिकीकरण के साथ संगठनों में भी परिवर्तन आया। इन्जीनियर, सिगनल्स, आर्मी सप्लाई कोर्पस्, आर्मी आर्डिनेन्स कोर्पस्, जासूसी, वायु रक्षा इत्यादि सेना की कुछ नई शाखाएं बनीं। स्पष्टत: इनमें से प्रत्येक शाखा की अपनी विशेषज्ञता है।

सैनिकों और अफसरों को अपनी कोर्पस् की भूमिका और दायित्व निर्वाह के लिए प्रशिक्षित करना होता था। आजकल युद्ध जीतने के लिए थल सेना, वायु सेना और जल सेना को मिलकर लड़ना होता है। इस कारण त्रि-सेवा संगठनों और त्रि-सेवा प्रशिक्षण की आवश्यकता पैदा हुई।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. आधुनिक सैनिक के किन्हीं तीन हथियारों के नाम लिखिए।
2. ब्रिटिश काल में किस प्रकार की सेनाएं थीं?

क्रियाकलाप 3.1

क) इन्टरनेट का प्रयोग करके दिए हुए लिंक पर जाएं और हथियारों के इतिहास को समझें।

http://www/theatlantic.com/video/index/393683/a-brief-visual-history-of-weapons/

इसे डाऊनलोड़ करें और प्राचीन काल, मध्य काल और आधुनिक काल में प्रयोग होने वाले कम से कम दो हथियारों के चित्र प्रिन्ट करें।

ख) नीचे दिए गए चित्रों के आधार पर प्राचीन काल के सैनिकों द्वारा सीखे जाने वाले कौशलों और आधुनिक काल के सैनिकों के कौशलों के बीच अन्तर कीजिए।

भाला

तलवार

स्रोत -https://www.indianetzone.com/photograllery/51/talwar.jpg

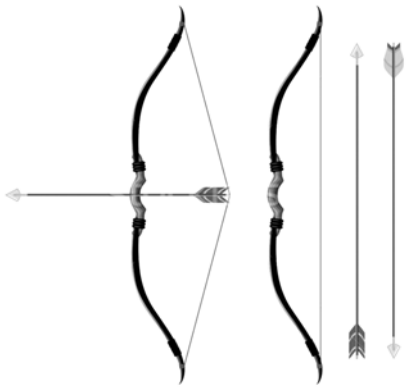

3.2 प्रशिक्षण में परिवर्तन

आप पहले ही जान चुके हैं कि सैनिकों को किस प्रकार प्राचीन काल में और मध्य काल में प्रशिक्षित किया जाता था। ब्रिटिश काल में सेनाओं का आधुनिकीकरण हुआ और सेनाएं अधिक गतिमान हो गई। युद्ध लड़ने के नए तरीकों और आधुनिक हथियारों ने पढ़ाए जाने वाले विषयों में परिवर्तन को आवश्यक बना दिया। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले सेना के कौन से पक्षों में परिवर्तन हुए?

- वायु सेना और जल सेना बनाने के साथ ही सेना सशस्त्र बल बन गई।
- सशस्त्र बलों की तीन शाखाओं के लिए सैन्य विषयों में प्रत्येक के लिए प्रशिक्षण विशेष रूप से अलग-अलग प्रकार का था।
- युद्ध के नए तरीकों के अनुरूप सेना का पुनर्गठन किया गया। सेनाओं ने अतिरिक्त आर्म्स खड़े किए जैसे इन्जीनियर्स योद्धा (पुल और सड़क निर्माण तथा बाधाएं दूर करना), सिगनल्स (दूरसंचार)
- थल सेना के पास राइफलें, मशीनगन, गन, मोर्टार, एन्टी टैंक मिसाइलें होती थीं। टैंकों के साथ घुड़ सेना भी थी। तोपखाना के पास दूर तक मार करने वाली बन्दूकें और राकेट तथा स्वचालित बन्दूकें थीं।

  हथियारों पर सैनिकों का सामान्य प्रशिक्षण पहले जैसा ही था सिवाय इसके कि विषय जटिल और गहन बन गया था। तलवार की जगह राईफल ने ले ली थी।
- सेना की तीनों शाखाओं थल, जल और वायु सेना को मिल के युद्ध लड़ना होता है। इसलिए त्रि-सेवा प्रशिक्षण शुरु किया गया।

3.2.1 सेना के प्रशिक्षण में परिवर्तन

आपने पिछले अध्याय में देखा कि किस प्रकार सैनिकों को आश्रमों और गुरुकुलों में प्रशिक्षित किया जाता था और सैन्य कौशल सिखाए जाते थे। सेनाओं में बदलाव आने और उनकी क्षमता बढ़ने के साथ प्रशिक्षण के तरीकों में भी बदलाव आया। आइए, हम तालिका के रुप में देखें कि सैनिकों को पढ़ाए जाने वाले विषयों में क्या परिवर्तन हुए।

शस्त्र कौशल	प्राचीन सैनिक	आधुनिक सैनिक
हथियारों के हिस्से पुर्ज़े	तलवार, भाला, तीर कमान से लड़ना	बन्दूक, मशीन गन, पिस्तौल, सब मशीन गन से लक्ष्य साधना और गोली चलाना
रख रखाव	तलवार और भाला/बरछी के हिस्से पुर्ज़े	बन्दूक/मशीनगन/गन और टैंकों के हिस्से पुर्ज़े
शारीरिक शिक्षा, खेलकूद	तलवारों और तीरों को धार देना, भालों, तलवारों और कवचों की साफ-सफाई करना	चलने वाले हिस्सों की विशेष सफाई, धातु, लकड़ी/प्लास्टिक के हिस्सों का रख-रखाव, शस्त्रों का सुरक्षित भंडारण, गोला-बारुद का रख-रखाव इत्यादि
विशेष विषय	हां	हां
	कोई नहीं	छोटे हथियारों को प्रयोग करना, विभिन्न प्रकार की बन्दूकों, मशीनगनों का प्रयोग, खराबी दूर करना, संचार उपकरण, पुल निर्माण

क्रियाकलाप 3.2

क) इन्टरनेट का प्रयोग करके प्रथम विश्व युद्ध में प्रयुक्त हुए हथियारों की एक सूची बनाइए।

ख) इस सूची की द्वितीय विश्व युद्ध में प्रयुक्त हुए हथियारों से तुलना कीजिए।

3.3 सशस्त्र बलों को प्रशिक्षण देने की आधुनिक प्रणाली

3.3.1 स्कूल प्रणाली

पिछले अध्याय में आपने सैन्य शिक्षा के भारतीयकरण के बारे में पढ़ा जहां सैन्य स्कूलों के गठन को उजागर किया गया था। 1962 के बाद सैनिक स्कूल स्थापित किए गए जिनका प्रबंधन रक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत सैनिक स्कूल सोसायटी करती है तथा ये स्कूल डिफेंस एकेडमी पूना के लिए फीडर स्कूल हैं।

इन स्कूलों का विचार भारत के तत्कालीन रक्षा मंत्री वी.के. कृष्ण मेनन का था तथा इनका गठन भारतीय सेना में आफिसर केंडर के बीच क्षेत्रीय और वर्ग असंतुलन को ठीक करने तथा नेशनल डिफेन्स एकेडमी खड़कवासला, पूना तथा नेशनल नेवल एकेडमी के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए किया गया था। वर्तमान में देश के सभी राज्यों में इस प्रकार के 26 स्कूल हैं।

3.3.2 नेशनल केडेट कॉर्पस (एन.सी.सी.)

इसके साथ ही स्कूल और कॉलेज स्तर पर एन.सी.सी. की व्यवस्था भी स्थापित की गई। भारत में नेशनल केडेट कॉर्पस अधिनियम 1948 के अन्तर्गत एन.सी.सी. का गठन किया गया। 15 जुलाई 1948 में इसको शुरु किया गया। यह सेना, जल सेना और वायु सेना का त्रि-सेवा संगठन है जो देश के युवा वर्ग को अनुशासित और देशभक्त नागरिक के रूप में तैयार करने में जुटा हुआ है। भारत में एन.सी.सी. एक स्वैक्षिक संगठन है जो पूरे देश के हाई स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों से केडेट भर्ती करता है। केडेट्स को छोटे हथियारों और परेड का आधारभूत सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है। एन.सी.सी. के अफसरों और केडेट्स को अपना कोर्स पूरा करने के बाद सक्रिय सेना में काम करने की कोई पाबन्दी नहीं है परन्तु उन्हें कॉपर्स में प्राप्त की गई उपलब्धियों के आधार पर सामान्य उम्मीदवारों के समक्ष वरीयता दी जाती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि 1965 और 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय एन.सी.सी. केडेट्स को द्वितीय रक्षा पंक्ति का दायित्य सौंपा गया था। उन्होंने आर्डीनेन्स फैक्ट्रियों की सहायता, सीमा पर हथियारों और गोला बारुद की आपूर्ति करने के लिए शिविर लगाए तथा दुश्मन के पैराट्रूपर्स को पकड़ने के लिए पैट्रोलिंग करने के का काम किया। एन.सी.सी. केडेट्स ने नागरिक सुरक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर काम किया तथा बचाव कार्यों और ट्रैफिक नियन्त्रण में सक्रिय भाग लिया।

3.3.3 विशेष एकेडमियां

जैसा कि आपने आधुनिक सेना के बदलाव में वायु सेना और जल सेना के घटक तथा श्रेष्ठ हथियारों के शामिल होने के बारे में पढ़ा, उसी प्रकार प्रशिक्षण भी विशेषज्ञता पूर्ण हो गया है। सशस्त्र सेनाओं की प्रत्येक शाखा में अपने सैनिकों को प्रशिक्षण देने के लिए अपनी अलग एकेडमियां हैं।

क) **सैनिक प्रशिक्षण :** सेना के अपने रेजीमेन्टल केन्द्र हैं जहां नए भर्ती हुए जवानों तथा सैनिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके साथ ही प्रशिक्षण एकेडिमियां अपनी सेना की विभिन्न शाखाओं के विशेष पक्षों के लिए भी प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। सेना के रेजीमेन्टल केन्द्रों से अलग नेवी और एयर फोर्स की अपनी अनेक एकेडिमियां हैं जो प्रत्येक शाखा में प्रशिक्षण देने का कार्य करती हैं।

ख) **अधिकारी प्रशिक्षण :** तीनों सेनाओं के अधिकारियों को स्कूलों के बाद नेशनल डिफेंस एकेडमी खड़कबासला और पुणे में आधारभूत प्रशिक्षण दिया जाता है। सिविल कालेजों के स्नातकों को इन्डियन मिलिट्री एकेडमी (IMA)/नेवल एकेडमी/एयर फोर्स एकेडमी आफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (OTA) में भी प्रशिक्षित किया जाता है।

भारतीय सशस्त्र बलों के कुछ प्रशिक्षण प्रतिष्ठानों की सूची नीचे दी गई है :-

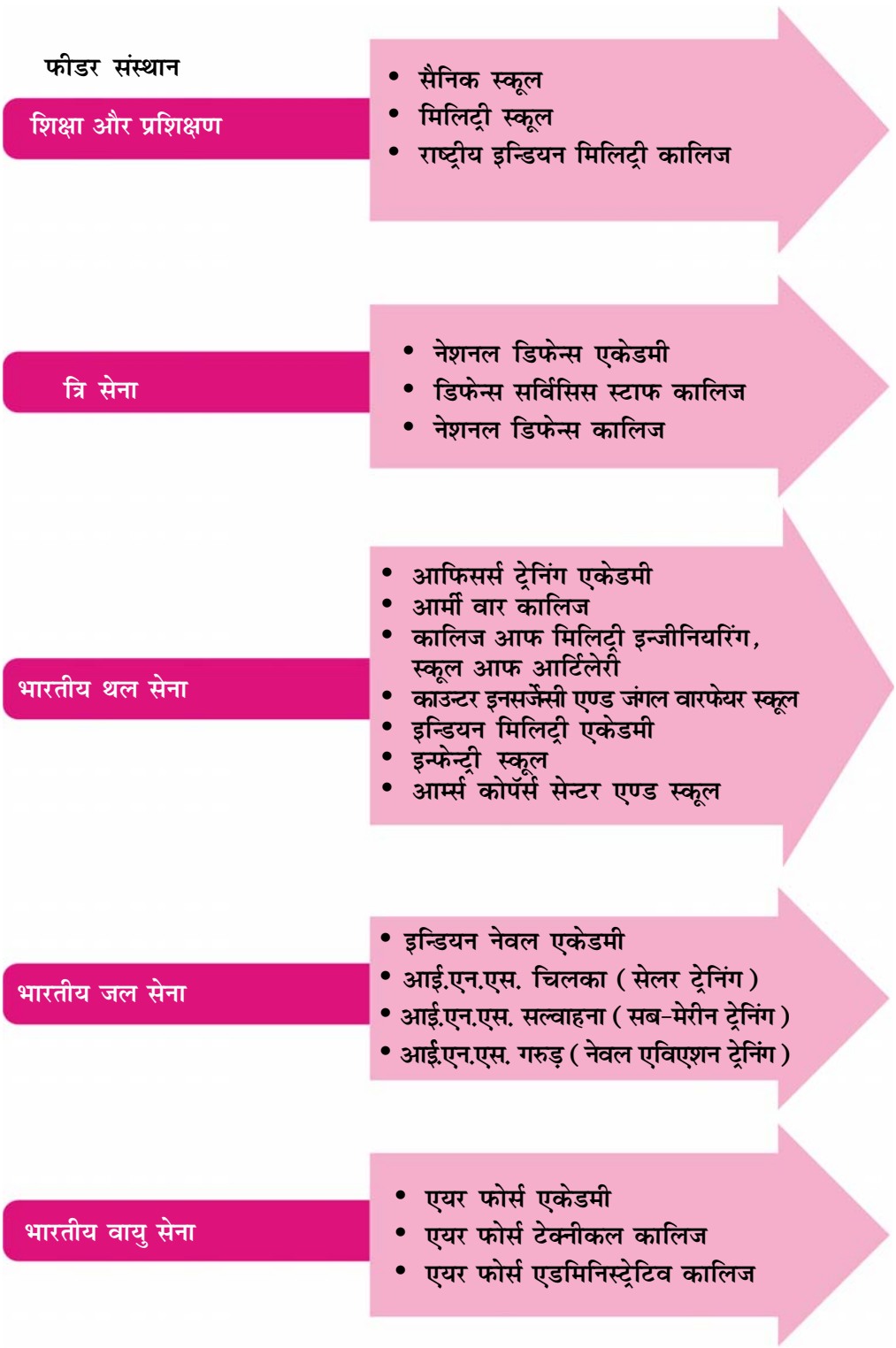

भारत में सैन्य प्रशिक्षण प्रतिष्ठान

पाठगत प्रश्न 3.2

1. भारत में किस वर्ष सैनिक स्कूल शुरु किए गए?
2. नेशनल केडेट कोर्पस की स्थापना वर्ष ..... में हुई थी।
3. भारत के किन्हीं तीन मिलिट्री स्कूलों के नाम लिखिए।

आपने क्या सीखा

- सैन्य संगठनों, नए हथियारों तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उन्नति के कारण समय के साथ सैन्य अध्ययन में बदलाव आया।
- युद्ध के तौर-तरीकों में भी हथियारों की व्यवस्था तथा संगठन में परिवर्तन आने के कारण बदलाव आया।
- एक सैनिक को पढ़ाए जाने वाले विषयों में भी परिवर्तन किए गए। सैन्य अध्ययन के पाठ्यक्रम को युद्ध के तरीकों और हथियारों के अनुरुप बनाया गया।
- भारत में सैनिक को प्रशिक्षण देने में बदलाव आया।
- भारत में 1948 में एन.सी.सी. का गठन देश के युवा वर्ग को सैन्य प्रशिक्षण का आधाारभूत प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से किया गया।
- सैनिक स्कूल और मिलिट्री स्कूल स्थापित किए गए। थल सेना, वायु सेना और जल सेना के नए संगठनों के अनुरूप विशेष प्रशिक्षण देने के लिए एकेडिमियां स्थापित की गई।
- सेना की प्रत्येक शाखा के पास सैनिकों और अफसरों को आवश्यकता के अनुसार प्रशिक्षण देने के लिए अपनी एकेडिमियां हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. हथियारों पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव स्पष्ट कीजिए। हथियार प्रणाली में आए किन्हीं पांच परिवर्तनों के नाम लिखिए जिनके कारण युद्ध लड़ने की प्रकृति में परिवर्तन आया।
2. मध्य कालीन भारत से लेकर ब्रिटिश शासन तथा आधुनिक काल तक युद्ध लड़ने की कला में आए परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।
3. थल सेना के सैनिकों को प्रशिक्षण देने के लिए गठित विशेषता मूलक एकेडिमियों का क्या अर्थ है?
4. भारत में विद्यार्थियों को सेना में शामिल करने के लिए प्रशिक्षण देने की आधुनिक स्कूल व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
5. नेशनल केड्स कोर्पस (एन.सी.सी) की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. मशीनगन, मिसाइल, बन्दूकें और टैंक

2. घुड़सेना, तोपखाना, पैदल सेना, सिग्नल्स, इन्जिनियर्स, वायु सेना, जल सेना

3.2 1. 1961

2. 1948

3. • सैनिक स्कूल, मिलिट्री स्कूल और राष्ट्रीय मिलिट्री कालेज
   • मिलिट्री स्कूल (सबसे पुराना) वर्ष 1922 में स्थापित किया गया था, अजमेर मिलिट्री स्कूल,
   • बेलगाम मिलिट्री स्कूल, धौलपुर मिलिट्री स्कूल